Name of Scholar	:	**ALAMGEER**
Name of Supervisor	:	**Prof. M.P. SHARMA**
Department /Faculty	:	**HINDI DEPARTMENT, FACULTY OF HUMANITIES AND LANGUAGES, JAMIA MILLIA ISLAMIA, NEW DELHI-25**
Title of the Thesis	:	**VARTMAN SANDARBHON MEIN PREMCHAND KE KATHETAR SAHITYA KA MOOLYANKAN**

शोधसार

प्रेमचंद कथाकार के साथ-साथ बहुत महान पत्रकार भी थे। उन्होंने अपनी पत्रिकाओं के माध्यम से आधुनिक हिन्दी पत्रकारिता की नींव रखी थी। प्रेमचंद की अन्य रचनाओं का जितना महत्व है उतना ही उनकी पत्रकारिता का भी है। कथेतर गद्य ने भी तत्कालीन समाज को बहुत प्रभावित किया था। यह आवश्यकता महसूस होती थी कि प्रेमचंद के कथा साहित्य के साथ-साथ उनके कथेतर गद्य का भी समुचित अध्ययन हो। प्रेमचंद ने तत्कालीन समाज की हर समस्या पर अपनी लेखनी चलाई। उन्होंने दहेजप्रथा, किसानों की समस्या, मजदूरों की समस्या, अछूतों की समस्या, महिलाओं की स्थिति, स्वराज, स्वाधीनता संग्राम आदि पर अपने विचार रखे और उनपर कहानियां और निबंध दोनों लिखे। शायद यही कारण था कि प्रेमचंद अपने युग में ही प्रसिद्ध हो गये थे। इसका कारण यह है कि उनका लेखन समाजिक सरोकारों से जुड़ा हुआ था। वे जिन मुद्दों पर लिखते थे उसका व्यापक प्रभाव समाज पर पड़ता था। लोग उस पर अपनी सहमति या असहमति दोनों दर्ज कराते चलते हैं। प्रेमचंद ने अपनी रचनाओं में जन साधारण की भावनाओं, परिस्थितियों और उनकी समस्याओं का मार्मिक चित्रण किया था। उनकी लेखन भारत के सर्वाधिक विशाल और विस्तृत वर्ग की लेखन हैं। प्रेमचंद जिस दौर में लिखना प्रारंभ किया वह पराधीनता का दौर था। वे जहां एक ओर सामाजिक एकता और सौहाद्र के लिए कथा साहित्य के माध्यम से प्रयासरत थे वहीं दूसरी ओर जनसरोकारों से जुड़ी अपनी पत्रकारिता के माध्यम से लोगों में स्वाधीनता के प्रति जागरूकता के साथ-साथ उस समय समाज में व्याप्त कुरीतियों और विषमताओं के विरुद्ध भी आवाज बुलंद कर रहे थे।

उनका पूरा साहित्य अपने समाज का ज्वलंत दस्तावेज है तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। प्रेमचंद ने सांप्रदायिकता हो या दहेज-प्रथा, किसान, मजदूर, छूत-अछूत, महिला समस्या, भाषा, आजादी, चुनाव, कोई भी समस्या हो हर विषय पर लिखा। उनके लेखन का जो

महत्व उस समय समझा गया वह महत्व आज भी है। वह कौन-सी शक्ति है जो प्रेमचंद को अन्य लेखकों से अलग करती है। उन्होंने जनसभाओं में जो भाषण दिए उनका भी समाज पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। समाज में इनके माध्यम से नयी शक्ति का संचार हुआ।

वर्तमान संदर्भों में प्रेमचंद को समझने की कोशिश करें तो हम पाते हैं कि सिर्फ समय बदला है, हमने विकास किया हैं लेकिन हमारी समस्याएं काफी हद तक वैसी ही हैं जैसा कि प्रेमचंद के समय में थीं। जातिप्रथा की समस्या जिस तरह उनके युग में थी वह आज भी है। प्रेमचंद मजदूरों के हक के बारे में अपनी आवाज बुलंद करते थे क्योंकि उस समय में इसकी बहुत जरूरत थी। आज भी हम मजदूरों की स्थिति पर नजर डालें तो हम देखेंगे कि कमोबेश स्थिति वही है। आज भी मजदूरों की स्थिति चिंताजनक है।

प्रेमचंद के साहित्यकार रूप की चर्चा तो बहुत हुई पर प्रेमचंद की पत्रकार रूप की चर्चा नहीं के बराबर हुई है। उनके पत्रकारिता से जुड़े लेखन, उनके रिपोर्ताज, लेख, टिप्पणियां, पुस्तक परिचय व समीक्षाएं वगैरह को पढ़े बगैर प्रेमचंद के समग्र साहित्यिक अवदान को नहीं समझा जा सकता। कुल मिलाकर यह कह सकते हैं कि मैंने इस शोध के दौरान यह पाया कि प्रेमचंद एक आवश्यक कथाकार-पत्रकार हैं। इनके साहित्य और पत्रकारिता के योगदानों के अध्ययन के बिना अपने समाज का न तो मूल्यांकन कर सकते हैं और न ही उस युग को समझ सकते हैं जो हमारा अतीत रहा है। मेरा यह प्रयास रहा है कि इसमें हम उन सारी विशेषताओं को समेट सकें तथा उनका मूल्यांकन कर सकूं जो अब तक किसी शोध में नहीं आ सकी हैं। प्रेमचंद के कथेतर साहित्य का यह अध्ययन वर्तमान संदर्भों में मूल्यांकित करने का एक छोटा सा प्रयास है। प्रेमचंद जैसे विशाल लेखक को इस अध्ययन के माध्यम से समझने की कोशिश की गयी है। इसकी पृष्ठभूमि स्पष्ट करते हुए मैं बस इतना कहना चाहूंगा कि प्रेमचंद का कथेतर साहित्य में भी एक लय विद्यमान है, जो हमें उनसे जोड़ती है।

निष्कर्ष के तौर पर हम कहें कि प्रेमचंद के कथेतर गद्य में उनकी पत्रकारिता से संबंधित रचनाओं का विशेष महत्व है। उनके संपादकीय, आलेख, टिप्पणियां, पत्र आदि ने हमें राह दिखाई है। प्रेमचंद ने अपने कथेतर गद्य में आम आदमी की समस्याओं को प्रमुखता से स्थान दिया। पत्रकारिता की जो शैली उन्होंने विकसित की उसी पर आज की पत्रकारिता खड़ी है। वर्तमान संदर्भों में प्रेमचंद के कथेतर गद्य की प्रासंगिकता को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।